प्लासी के युद्ध का महत्व

प्लासी का युद्ध 23 जून 1757 को हुआ था। इस युद्ध में एक ओर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना थी तो दूसरी ओर बंगाल के नवाब की सेना थी। कंपनी की सेना ने राबर्ट क्लाइव के नेतृत्व में नवाब सिराजुद्दौला को हरा दिया था। युद्ध को भारत के लिए बहुत दुर्भाग्यपूर्ण माना जाता है इस युद्ध से ही भारत की गुलामी की कहानी शुरू होता है।

प्लासी के युद्ध का सामरिक महत्व अधिक नहीं था। यह एक छोटी सी झड़प थी जिसमें कम्पनी के कुल 65 व्यक्ति तथा नवाब के 500 व्यक्ति काम आये। अंग्रेजों ने किसी विशेष सामरिक योग्यता तथा चातुर्य का प्रदर्शन नहीं किया, नवाब के साथियों ने विश्वासघात किया। और मैदान के वीर गति प्राप्त करने के पश्चात् विश्वासघातियों का ही बोलबाला था। यदि मीर जाफर तथा राय दुर्लभ राजभक्त रहते तो युद्ध का परिणाम भिन्न रहता।

क्लाईव कूटनीति में दक्ष था। उसने जगत सेठ को भय दिखाया, मीर जाफर की महत्वाकांक्षाओं को जगाया तथा बिना लड़े ही युद्ध जीत लिया। यह एक तरह से सौदा था जिसमें बंगाल के धनी सेठों तथा मीर जाफर ने नवाब को अंग्रेजों के हाथों बेच डाला।

प्लासी का युद्ध उसके पश्चात् होने वाली घटनाओं के कारण ही महत्वपूर्ण है। बंगाल अंग्रेजों के अधीन हो गया और फिर स्वतंत्र नहीं हो सका।

Scanned with CamScanner

नया नवाब मीर जाफर अपनी रक्षा तथा पद के लिए अंग्रेजों पर निर्भर था। उसकी 6000 सेना उसकी रक्षा हेतु बंगाल में स्थित थी। धीरे-धीरे समस्त शक्ति कम्पनी के हाथों में चली गई। उसकी असमर्थता का अनुमान इस बात से लगा सकते हैं कि वह दीवान राय दुर्लभ तथा राम नारायण को उनके विश्वासघात के लिए दण्डित करना चाहता था परन्तु कम्पनी ने उसे रोक दिया। अंग्रेज रेजिडेंट वाट्स का विशेष प्रभाव था। इतिहासकार गुलाम हुसैन लिखता है कि पदोन्नति के लिए केवल अंग्रेज का समर्थन आवश्यक था। शीघ्र ही मीरजाफर अंग्रेजों के जुए से दुःखी हो गया। वह डच लोगों से मिलकर अंग्रेजों को बाहर निकालने का षड्यंत्र रचने लगा। क्लाइव ने इस षड्यंत्र को November 1759 में लड़े, बेदरा के युद्ध में डच लोगों को पराजित कर विफल कर दिया। अब मीर जाफर ने भावी घटनाओं को समझने से इन्कार कर दिया तो उसे 1760 ई० में कम्पनी के मनोनीत व्यक्ति मीर कासिम के लिए स्थान छोड़ना पड़ा।

प्लासी के युद्ध तथा उसके पश्चात होने वाली लूट ने अंग्रेजों को अनन्त स्रोतों का स्वामी बना दिया। प्लासी के युद्ध के पश्चात होने वाला व्यापार को हम केवल लूट की संज्ञा ही दे सकते हैं। पहली किस्त जो अंग्रेजों को मिली वह 8 लाख पौंड की थी जो चाँदी के सिक्कों के रूप में ही थी। मैकॉले के

अनुसार यह धन कुलकत्ता को १०० सौ से नावों में भर कर लाया गया। बंगाल उस समय भारत का सबसे धनाढ्य प्रान्त था और उद्योग तथा व्यापार में सबसे आगे था। 1767 मे बेरेलस्ट लिखता है कि बंगाल समस्त भारत का व्यापार केन्द्र था जहाँ सारा धन खिंचा चला आता था। यहाँ की बनी वस्तुएँ भारत के दूरस्थ प्रदेशों में बिकती थी। बंगाल के इस अनन्त धन की सहायता से ही अंग्रेजो ने दक्कन विजय कर लिया तथा उत्तरी भारत को भी प्रभाव में ले आए।

कम्पनी की स्थिति का भी कायाकल्प हो गया। पहले वह बहुत सी विदेशी कम्पनियों में से एक थी जिसे नवाब के अधिकारीयों को धन देना पड़ता था। अब उसका बंगाल के व्यापार पर एकाधिकार हो गया। फ्रांस को पुनः अपने खोई हुई स्थिति को प्राप्त करने का अवसर नहीं मिला। अंग्रेज व्यापार के एकाधिकार से राजनैतिक एकाधिकार की ओर बढ़े।

भारत के भाग्य पर प्लासी के युद्ध का अत्यधिक प्रभाव पड़ा। प्लासी के युद्ध के बाद ही इंग्लैंड पूर्वी समस्या में विशेष भूमिका निभाने लगा। हम कह सकते हैं कि भारत पर आधिपत्य प्राप्त करने की श्रृंखला में यह महत्वपूर्ण कड़ी थी।

—x—

Scanned with CamScanner